Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ अनंत चतुर्दशी व्रत कथा ॥

॥ ॐ अनन्ताय नमः ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ सुशीला और अनंत सूत्र ॥

अनंत व्रत में सुनाई जाने वाली सुशीला और कौण्डिल्य ऋषि की प्रचलित कथा का संक्षिप्त रूपांतरण। कुछ क्षेत्रों में वर्णन का क्रम अलग मिलता है।

एक समय सुमन्त नाम के ब्राह्मण की पुत्री सुशीला का विवाह कौण्डिल्य ऋषि से हुआ। विवाह के बाद दोनों अपने आश्रम की ओर जा रहे थे। संध्या में वे नदी के पास रुके तो सुशीला ने कुछ महिलाओं को भगवान अनंत की पूजा करते देखा।

सुशीला ने उनसे व्रत के विषय में पूछा। महिलाओं ने बताया कि भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी पर भगवान विष्णु के अनंत स्वरूप का पूजन किया जाता है और चौदह गाँठों वाला सूत्र बाँधा जाता है। सुशीला ने भी श्रद्धा से पूजा की और अनंत सूत्र धारण किया।

कौण्डिल्य ने उसके हाथ में धागा देखा और कारण पूछा। सुशीला ने पूजा की बात समझाई, लेकिन ऋषि ने क्रोध में सूत्र को तोड़ दिया। कथा के अनुसार इसके बाद उनके जीवन में अनेक कठिनाइयाँ आईं। सुशीला ने उन्हें शांत मन से अपनी भूल पर विचार करने को कहा।

कौण्डिल्य को अपने व्यवहार पर पछतावा हुआ। वे भगवान अनंत का स्मरण करते हुए उन्हें खोजने निकले। यात्रा में उन्होंने अनेक प्रतीकात्मक प्रसंग देखे और अंततः उन्हें एक वृद्ध ब्राह्मण मिले।

॥ पश्चाताप और पुनः पूजा ॥

कथा में कहा जाता है कि वृद्ध ब्राह्मण के रूप में स्वयं भगवान अनंत ने कौण्डिल्य को दर्शन दिए। उन्होंने ऋषि को क्रोध छोड़कर श्रद्धा, संयम और सम्मान के साथ व्रत करने की सीख दी। कौण्डिल्य ने अपनी भूल स्वीकार की।

ऋषि आश्रम लौटे और सुशीला के साथ अनंत चतुर्दशी का पूजन किया। परंपरा में कई वर्षों तक व्रत करने और सामर्थ्य के अनुसार उद्यापन का उल्लेख मिलता है। दोनों ने परिवार में परस्पर सम्मान और धैर्य रखने का संकल्प लिया।

कथा का भाव

अनंत सूत्र को कथा में भगवान विष्णु के स्मरण का प्रतीक माना गया है। सुशीला की आस्था का आदर और कौण्डिल्य का पश्चाताप इस कथा के मुख्य भाव हैं। कठिनाइयों को किसी एक अनुष्ठान की कमी का निश्चित दंड न मानें।

कथा-पाठ

भगवान अनंत की पूजा में यह कथा पढ़ी या सुनी जाती है। इसके बाद आरती, प्रसाद और सबके मंगल की प्रार्थना की जा सकती है।

॥ ॐ अनन्ताय नमः ॥

HarGharPanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"